स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के तत्त्वावधान में अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान-एम्स, भुवनेश्वर द्वारा सातवां राष्ट्रीय राजभाषा सम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न-एक रिपोर्ट

(30 अप्रैल से 02 मई, 2019 तक आयोजित)

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा मंत्रालय एवं अधीनस्थ कार्यालयों के लगातार किए जाने वाले राजभाषा संबंधी निरीक्षणों में असहज स्थिति से बचने के लिए कुछ वर्ष पूर्व स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय ने निर्णय लिया था कि मंत्रालय के देशभर में स्थित सम्बद्ध एवं अधीनस्थ कार्यालयों में राजभाषा हिंदी का कामकाज बढ़ाने और अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपना ज्यादा से ज्यादा काम हिंदी में करने हेतु प्रोत्साहित करने के लिए राजभाषा सम्मेलन आयोजित किए जाएं। तद्नुसार यह भी निर्णय लिया गया कि इस प्रकार के सम्मेलन बारी-बारी से देश भर में मंत्रालय के अधीनस्थ आने वाले कार्यालयों में आयोजित किए जाएंगे।

राजभाषा सम्मेलनों की शुरुआत

इस श्रृंखला की शुरुआत वर्ष 2012 में निम्हांस, बंगलौर (कर्नाटक) से हुई जब मंत्रालय की निगरानी में पहला दो दिवसीय राजभाषा सम्मेलन बंगलौर स्थित राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान संस्थान में 26-27 दिसंबर, 2012 को आयोजित किया गया। सम्मेलन बेहद सफल रहा। दूसरा राजभाषा सम्मेलन 22-23 फरवरी, 2013 को भारतीय पाश्चर संस्थान, कुन्नूर (तमिलनाडु) में आयोजित किया गया। 'ग' क्षेत्र में आयोजित यह सम्मेलन भी बहुत अधिक सफल रहा। दोनों सम्मेलनों के दौरान संपूर्ण मंच संचालन श्री राजेश श्रीवास्तव, सहायक निदेशक (रा.भा.) ने किया। तीसरा सम्मेलन अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, नई दिल्ली में 12-12 फरवरी, 2014 को हुआ जिसका उद्घाटन तत्कालीन माननीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण राज्य मंत्री श्रीमती संतोष चौधरी जी ने किया और चौथा सम्मेलन, एचएलएल, तिरुवनंतपुरम में 29-30 दिसंबर, 2014 को आयोजित किया गया। इसी श्रृंखला का पाँचवां राजभाषा सम्मेलन 17 से 19 फरवरी, 2016 में राष्ट्रीय जनसंख्या विज्ञान संस्थान, मुंबई में आयोजित किया गया। इसी श्रृंखला का छठा राष्ट्रीय राजभाषा सम्मेलन जवाहरलाल स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान-जिपमेर, पांडिचेरी में 09 से 11 जनवरी, 2017 को आयोजित किया गया। अब इस वर्ष सातवां राष्ट्रीय राजभाषा सम्मेलन 30 अप्रैल से 02 मई, 2019 के दौरान **अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान-एम्स भुवनेश्वर (ओडिशा)** में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। इन समस्त सम्मेलनों का कुशल और सफल संचालन श्री श्रीवास्तव ने किया।

दीप प्रज्ज्वलन और सरस्वती वंदना से शुभारंभ

इस सम्मेलन का आरंभ **अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान-एम्स भुवनेश्वर** के परिसर में ही स्थित नर्सिंग ब्लॉक के मिनी ऑडिटोरियम में दीप-प्रज्ज्वलन और कला की देवी वीणावादिनी माँ सरस्वती की वंदना से हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता एम्स की निदेशक डॉ. गीतांजलि बतमानबाने ने की। संस्थान की निदेशक डॉ. गीतांजलि, चिकित्सा अधीक्षक श्री सच्चिदानंद मोहंती, डीन श्री विकास भाटिया, मंत्रालय के संयुक्त निदेशक डॉक्टर वेद प्रकाश दूबे और सहायक निदेशक (रा.भा.) श्री राजेश श्रीवास्तव ने दीप जलाकर सम्मेलन का विधिवत शुभारंभ किया। उनके साथ मंच पर एम्स के उप-निदेशक (प्रशासन) श्री प्रदीप कुमार राय भी मौजूद थे। श्री श्रीवास्तव ने अपनी इन पंक्तियों के साथ सारे प्रतिभागियों का स्वागत किया-

सुबह और शाम बस यही काम करता हूँ।
किसी को नमस्ते किसी को सलाम करता हूँ।।
उमंग की तरंग से रंग दो इस महफिल को।
ये खूबसूरत सुबह आपके नाम करता हूँ।।

(एम्स की निदेशक डॉ. गीतांजलि दीप प्रज्वलन करते हुए, साथ में हैं डॉ. वेदप्रकाश दूबे और श्री राजेश श्रीवास्तव)

एम्स की ओर से श्री प्रदीप कुमार राय और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की ओर से डॉक्टर दूबे ने सम्मेलन में देश भर से पधारे प्रतिनिधियों का मंत्रालय की ओर से स्वागत किया। श्री राय ने सभी मंचासीन अधिकारियों और विभिन्न प्रांतों से आए हुए प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कहा कि उन्होंने स्कूल और कॉलेज में कभी हिंदी भाषा नहीं पढ़ी, फिर भी उनका मानना है कि हिंदी बोलना और हिंदी में कार्य करना अत्यंत सरल और सहज है। ओड़िशा में हिंदी का प्रचार-प्रसार कम होते हुए भी, आप किसी भी आम नागरिक से मिलिए, वह हिंदी में आसानी से बात-चीत कर सकता है।

एम्स के डीन डॉ. विकास कुमार भाटिया ने आए सभी प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कहा कि यह हमारे लिए गौरवशाली अवसर है कि एम्स, भुवनेश्वर में इतना बड़ा आयोजन किया जा रहा है। हम लोग एम्स, भुवनेश्वर में हिंदी में काम करने की कोशिश कर रहे हैं, पर उतनी कोशिश नहीं हो पाई है जितनी होनी चाहिए। श्री भाटिया ने कहा कि लखनऊ में जन्म होने के कारण उनकी मातृभाषा हिंदी है, परंतु चंडीगढ़, महाराष्ट्र, ओड़िशा में कार्यस्थल होने के कारण उनकी भाषा पर क्रमश: पंजाबी, मराठी और उड़िया का प्रभाव भी बनता चला गया। इतनी सारी भाषाओं के मिश्रित प्रभाव और अन्य भाषाओं के प्रभाव के बावजूद भी एक ही भाषा है, जो हम सबको जोड़ती है और वह है हिंदी। उन्होंने बताया कि न सिर्फ भारत में, बल्कि विदेशों में भी हिंदी का प्रचार-प्रसार पर्याप्त रूप से हो रहा है, जैसे मॉरीशस, बांग्लादेश, पाकिस्तान आदि देशों में हिंदी फिल्मों और हिंदी गीतों का काफी प्रचलन है। ऑस्ट्रेलिया में तो एयरपोर्ट आदि सार्वजनिक स्थानों पर हिंदी में लिखना शुरू कर दिया है, क्योंकि वहां पर बहुत से भारतीय रहते हैं।

इसके पश्चात, एम्स के चिकित्सा अधीक्षक डॉ. सचिदानंद मोहंती ने मंचासीन अधिकारियों और विभिन्न संस्थानों से आए सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया और उन्होंने अपने हिंदी के शौक और इसे किस तरीके से सीखा, उसका जिक्र करते हुए कहा कि *अपनी पढ़ाई के समय में उन्हें हिंदी पिक्चर देखने का शौक था, वे इंटरवल के समय हिंदी पिक्चर देखने चले जाते थे और कभी-कभी गेट कीपर को 20 पैसा देकर*

पिक्चर देखने जाते थे"। सातवां राष्ट्रीय राजभाषा सम्मेलन एम्स, भुवनेश्वर में आयोजित करने के लिए उन्होंने मंत्रालय का आभार प्रकट किया और सम्मेलन के सफल होने की कामना की।

इस अवसर पर मंत्रालय से पधारे संयुक्त निदेशक डॉ.वेद प्रकाश दूबे ने सभी भाषाप्रेमियों का स्वागत करते हुए कहा कि मेरा भारत महान है जहां शब्दों का भेद नहीं है, भाषा की दीवार नहीं है, किसी के होने या न होने की कोई परवाह नहीं है, सिर्फ एक लक्ष्य है कि हमें इस भाषा की लय को आगे बढ़ाना है। उन्होंने कहा कि यहां से जो हिंदी में प्रचार-प्रसार की शुरुआत होगी, वह पूरे देश तक जाएगी। उन्होंने प्रतिभागियों से कहा कि कौन कहता है कि आपको भाषा हिंदी नहीं आती, आपके डीएनए में हिंदी है, आपके मस्तिष्क में हिंदी हैं, हिंदी का अर्थ है भारतीय भाषाएं और उनका मिला-जुला रूप ही तो हिंदी है।

तत्पश्चात उद्घाटन समारोह की अध्यक्षा और एम्स, भुवनेश्वर की निदेशक महोदया डॉ. गीतांजलि ने मंचासीन अधिकारियों, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय से आए राजभाषा अधिकारियों, देश के विभिन्न प्रांतों से इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए बड़ी संख्या में आए हुए अधिकारियों और भुवनेश्वर स्थित कार्यालयों से पधारे प्रतिभागियों का हार्दिक स्वागत और अभिनंदन किया। उन्होंने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि एम्स, भुवनेश्वर एक नया और स्वस्थ विकसित संसार है, जो निरंतर विकास की ओर अग्रसर है। इस सम्मेलन को एम्स, भुवनेश्वर में आयोजित करने के लिए डॉ. गीतांजलि ने स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय का तहे दिल से धन्यवाद दिया और मंत्रालय द्वारा दी गई जिम्मेदारी को पूरी निष्ठा के साथ पूरा करने का आश्वासन दिया। राष्ट्रीय राजभाषा सम्मेलन के सफल आयोजन की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ और सभी को भाग लेने के लिए धन्यवाद देते हुए डॉ. गीतांजलि ने अपनी वाणी को विराम दिया।

इसके बाद श्री श्रीवास्तव ने मंत्रालय द्वारा अब तक आयोजित किए जा चुके समस्त सम्मेलनों की संक्षेप में जानकारी दी और दो दिन के इस सम्मेलन की प्रस्तावित रूपरेखा का भी उल्लेख किया। उन्होंने एक प्रेरक कथा के माध्यम से सभी प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए सम्मेलन को यादगार बनाने का आह्वान किया।

(बायें से दायें-श्री सच्चिदानंद मोहंती, श्री विकास भाटिया, निदेशक डॉक्टर गीतांजलि, श्री प्रदीप कुमार राय, डॉक्टर वेद प्रकाश दूबे और कार्यक्रम संचालन करते श्री राजेश श्रीवास्तव)

प्रतिभागियों का स्वागत करने के पश्चात डॉ. गीतांजलि ने स्मृति चिह्न और अंगवस्त्रम् से मंत्रालय के संयुक्त निदेशक डॉ. वेद प्रकाश दूबे का सम्मान किया।

निदेशक महोदया ने मंत्रालय से पधारे श्री राजेश श्रीवास्तव को भी स्मृति चिह्न और अंगवस्त्रम् प्रदान कर सम्मानित किया।

पहला सत्र- हिंदी एवं उड़िया भाषा एवं साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन

सम्मेलन के पहले सत्र का विषय था-"***हिंदी एवं उड़िया भाषा एवं साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन***"। इसके व्याख्याता थे-उड़िया के जाने माने लेखक, अनुवादक, अध्यापक और विद्वान प्रो. राधाकांत मिश्र। सत्र की अध्यक्षता संयुक्त निदेशक डॉक्टर वेद प्रकाश दूबे ने की। कुछ संस्मरणों के साथ अपना व्याख्यान आरंभ करते हुए प्रो. मिश्र ने कहा कि हिंदी सहज सरल भाषा है और ओडिशा में प्राय: सभी इसे समझते और बोलते हैं। उन्होंने उड़िया प्रदेश को कलिंग, कौशल, उत्कल जैसे अनेक नामों से संबोधित किया। उन्होंने कहा कि ओडिशा प्रदेश में धर्म, जाति और भाषा को लेकर जितनी सहनशीलता है, उतनी और कहीं नहीं। इस समरसता और सहनशीलता के लिए उन्होंने भगवान जगन्नाथ को नमन किया जो सभी धर्मों, पंतों और जातियों के आराध्य हैं और जो आदिवासियों के भी कुल देवता थे।

प्रो. मिश्र ने भक्ति दर्शन का जिक्र करते हुए बताया कि भक्ति काल का उदय दक्षिण से हुआ। कबीर, सूरदास, तुलसीदास और रैदास का उदय भक्तिकाल में ही हुआ, जिन्होंने हिंदी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। संपूर्ण साहित्य का जो हिंदी दर्शन है, उसका उदय दक्षिण से हुआ। भक्तिकाल के जो चार आचार्य थे, वे दक्षिण से ही आए थे। उड़िया भाषा आधुनिक आर्य भाषाओं में पूर्वी क्षेत्र की भाषा है। पूर्वी भाषा परिवार में उड़िया, असमिया और बंगाली भाषाएं आती हैं। बौद्ध साहित्य के चर्यापदों में पूर्वी उड़िया, असमिया और बंगाली भाषाओं के शब्दों की बहुलता है। जिस क्रम में संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और हिंदी का विकास हुआ, उसी प्रकार संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और उड़िया भाषा का भी विकास हुआ है।

उन्होंने कहा कि एक आम उड़िया भाषी, जिसने अपने स्कूल स्तर पर कभी हिंदी नहीं पढ़ी, वह भी हिंदी में बात-चीत कर सकता है। भाषा के माध्यम से हम एक-दूसरे को जोड़ कर रख सकते हैं, तभी इस भारत की संस्कृति की सुरक्षा हो सकती है। मिश्र जी ने हिंदी और उ़डिया भाषा की तुलना करते हुए बताया कि यदि लिपि का भेद हटा दिया जाए तो दोनों भाषाओं में काफी समानताएं हैं, जैसे: हिंदी में चांद और उ़डिया में चांदो। हिंदी और उ़डिया भाषा में 'लिंग विधान' का उल्लेख करते हुए मिश्र जी ने कहा कि उड़िया और बंगाली भाषा में लिंग विधान नहीं है जबकि हिंदी में स्त्रीलिंग और पुल्लिंग के रूप में दो लिंग हैं। उड़िया भाषा में शब्दों के प्रयोग से लिंगभेद नहीं किया जा सकता। ध्वनियों की विभिन्नता को दर्शाते हुए उन्होंने बताया कि हिंदी में मात्राएं स्पष्ट ह्रस्व और दीर्घ रूप में आती हैं जबकि उ़डिया में ह्रस्व और दीर्घ का कोई अंतर नहीं है। हिंदी में **ऋ** की मात्रा उड़िया में **रू** के रूप में पढ़ी जाती है।

प्रो. मिश्र ने बताया कि ओ़डिशा में हिंदी के 16 स्नातकोत्तर विभाग हैं, जहां से प्रतिवर्ष लगभग 400 विद्यार्थी हिंदी में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त करते हैं, जिनमें से कुछ तो स्कूलों में अध्यापक और कुछ राज्य या केंद्र सचिवालय में अनुवादक की नौकरी पाते हैं। उनका व्याख्यान बेहद रोचक, ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायी रहा जिसे सबने सराहा। सत्र की अध्यक्षता कर रहे डॉ. वेदप्रकाश दूबे ने प्रो. मिश्र की अभिव्यक्ति को सरल, सहज और सारगर्भित बताया। उन्होंने कहा कि विदेशों की अपेक्षा भारतीय संस्कृति और भारतीय विद्वता सर्वोत्कृष्ट है। जितनी भी विदेशी भाषाएं हैं, सब भारतीय भाषाओं से ही निकली हैं। पिछले 50 हजार वर्षों से भारतीय भाषाओं की ध्वनियां पूरे विश्व में गूंज रही हैं, इसीलिए हजारों वर्ष पहले हमने पूरे गर्व से कहा था- वसुधैव कुटुंबकम। भारतीय संस्कृति में भारत की परिभाषा- **भा** माने 'ज्ञान', **रत** माने 'लगा हुआ' अर्थात् जो ज्ञान की उपासना में रत है, वह भारत है, भारतीय है। इसके साथ ही प्रथम सत्र का समापन हो गया।

दूसरा सत्र- टंकण और अनुवाद की नई तकनीकें, वॉइस टाइपिंग तथा यूनिकोड

दूसरे सत्र का विषय था-"***टंकण और अनुवाद की नई तकनीकें, वॉइस टाइपिंग तथा यूनिकोड***"। इस सत्र के व्याख्याता थे- अपने रोचक और ओजस्वी व्याख्यानों के लिए ख्यात स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के सहायक निदेशक (रा.भा.) श्री राजेश श्रीवास्तव। श्री संतोष सोहगोरा, उप-निदेशक (प्रशा.), अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, भोपाल ने सत्र की अध्यक्षता की।

श्री श्रीवास्तव ने पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से सॉफ्टवेयर की दुनिया में हिंदी के बढ़ते कदमों के बारे में प्रतिभागियों को अवगत कराया। उन्होंने बताया कि कभी कंप्यूटर के दर्शन भी दुर्लभ थे लेकिन आज हम भी उस दौर में आ गए हैं जहाँ कंप्यूटर को किसी सॉफ्टवेयर को खरीदे या डाउनलोड किए बिना चंद ही मिनटों में द्विभाषी किया जा सकता है, बोलकर टाइप की जा सकती है और यहाँ तक कि अब तो आँखों से देखने मात्र से ही टाइपिंग करने की भी शुरुआत हो चुकी है।

श्री श्रीवास्तव ने बताया कि यूनीकोड कोई सॉफ्टवेयर नहीं है जिसे कहीं से खरीदने या डाउनलोड करने की ज़रूरत है। यह तो कंप्यूटर में मौजूद एक ऐसी सुविधा का नाम है जिसे आपको अपने सिस्टम में इनेबल या एक्टिवेट करना भर होता है और इसके सारे फॉन्ट स्वत: ही आपके सिस्टम में आ जाते हैं। इसका डिफॉल्ट फॉन्ट मंगल हैं लेकिन आजकल यूनीकोड के 50 से भी ज्यादा फॉन्ट इस्तेमाल किए जाते हैं। उन्होंने माइक्रोसॉफ्ट द्वारा उपलब्ध कराए गए इंडिक लैंग्वेज़ इनपुट टूल की विस्तार से जानकारी दी जो देश की नौ भाषाओं में उपलब्ध है। इसके माध्यम से तब तक अंग्रेजी कीबोर्ड के जरिए हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में टाइपिंग की जा सकती है जब तक आप मूल रूप से संबंधित भाषा की टाइपिंग करना सीख न लें। उन्होंने स्लाइडों के माध्यम से तथा वर्ड फाइल पर कार्य करके प्रतिभागियों को समझाया। श्री श्रीवास्तव ने इस संबंध में प्रतिभागियों द्वारा पूछे गए अनेक प्रश्नों का उत्तर दिया और उनकी शंकाओं का निवारण किया।

उन्होंने वॉयस टाइपिंग के बारे में भी विस्तार से जानकारी दी और प्रतिभागियों को बताया कि गूगल क्रोम ब्राउज़र, एक हैडफोन या हैंड्सफ्री या माइक और एक जीमेल खाते के साथ वे बड़ी आसानी से वॉयस टाइपिंग कर सकते हैं। करना सिर्फ इतना होता है कि जीमेल के ऐप्स में जाकर वॉइस टाइपिंग को एक्टिवेट करना होता है और काम शुरु हो जाता है। उन्होंने बताया कि इंडिक लैंग्वेज़ इनपुट टूल के माध्यम से जहाँ ऑफलाइन काम किया जाता है, वहीं वॉइस टाइपिंग के लिए तेज गति वाले इंटरनेट की जरूरत होती है। दक्षिणपूर्व भारत के उड़ीसा प्रदेश में जहाँ हिंदी टाइपिस्ट का मिल पाना बेहद मुश्किल है, यह सत्र बेहद सफल रहा और श्री श्रीवास्तव के वक्तव्य को बेहद सराहा गया। मौजूद प्रतिभागियों में इस बारे में अधिक से अधिक जानने की जिज्ञासा दिखाई दी।

श्री श्रीवास्तव के व्याख्यान के पश्चात सत्र की अध्यक्षता कर रहे श्री संतोष सोहगोरा, उप-निदेशक (प्रशा.) एम्स, भोपाल ने इस सत्र को सभी के लिए बेहद उपयोगी बताया। उन्होंने कहा कि आज के युग में कम्प्यूटर साक्षरता ही सही मायने में साक्षरता है। जीवन के हर क्षेत्र में कम्प्यूटर की महत्ता बताते हुए उन्होंने सुझाव दिया कि कम्प्यूटर पर कार्य सावधानीपूर्वक करें, क्योंकि इससे पासवर्ड आदि क्लाउड होने का खतरा रहता है। उन्होंने कहा कि हिंदी के उत्तरोत्तर विकास में सभी डॉक्टरों / वैज्ञानिकों / इंजीनियरों की सहभागिता भी अपेक्षित है। अक्सर देखा गया है कि माइक्रोसॉफ्ट और विंडोज जैसी कंपनियां भी अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी को प्रोत्साहन दे रही हैं। उन्होंने श्री श्रीवास्तव को बेहद उपयोगी और ज्ञानवर्धन व्याख्यान के लिए धन्यवाद दिया।

तीसरा सत्र- कार्यालयीन उपयोग में राजभाषा हिंदी और पत्राचार

तीसरे सत्र का विषय था- **"*कार्यालयीन उपयोग में राजभाषा हिंदी और पत्राचार*"** और वक्ता थे अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान-एम्स, भोपाल के उप-निदेशक(प्रशा.) श्री संतोष सोहगोरा और जिपमेर, पुदुच्चेरी की सहायक निदेशक (रा.भा.) डॉक्टर एन. कामाक्षी ने सत्र की अध्यक्षता की। अपनी चर्चा आरंभ करते हुए श्री सोहगोरा ने कहा कि भारत में लगभग 55% लोग हिंदी भाषी हैं और अन्य 45% लोग अन्य भाषा-भाषी हैं। हिंदी भाषा आज सभी भाषाओं के बीच कड़ी का काम करती है। उन्होंने कहा कि हिंदी भाषा में भाव के अनुसार संबोधन के अनेक विकल्प हैं जैसे तू, तुम, आप; जबकि अंग्रेजी में इसके लिए केवल एक ही शब्द है 'यू'।

श्री सोहगोरा ने बताया कि 100 से अधिक देशों में हिंदी भाषा बोली जाती है और 17 देशों में यह अधिकारिक भाषा बन चुकी है। यह विश्व मे बोली जाने वाली भाषाओं में दूसरी सबसे बड़ी भाषा है। विश्व की 15 सबसे बड़ी भाषाओं में 4 भाषाएं तो भारतीय भाषाएं ही हैं। उन्होंने सुझाव दिया कि यदि कार्यालय में हिंदी के काम-काज का प्रवाह ऊपर से नीचे की ओर हो तो इसमें कार्य करना और भी सरल हो जाता है। हिंदी में कार्यालयी पत्राचार का विस्तार से वर्णन करते हुए श्री सोहगोरा ने विभिन्न प्रकार के पत्राचारों और इनकी लेखनशैली का उल्लेख किया, जिनमें साधारण पत्र, कार्यालय ज्ञापन, ज्ञापन, अर्द्धशासकीय पत्राचार, पृष्ठांकन पत्राचार, अधिसूचना, विनियम, प्रेस नोट, कार्यालय आदेश, परिपत्र, आदेश आदि शामिल हैं। उन्होंने सुझाव दिया कि कार्यालयी काम-काज में पत्राचार की बहुत बड़ी भूमिका रहती है, इसलिए हिंदी में पत्राचार को उत्तरोत्तर रूप से बढ़ावा दिया जाए।

सत्र की अध्यक्षता कर रही डॉ. एन. कामाक्षी ने श्री सोहगोरा के व्याख्यान को महत्वपूर्ण और उपयोगी बताते हुए जानकारी दी कि उनकी मातृभाषा और स्कूली शिक्षा का माध्यम तमिल है। हिंदी प्रचारिणी सभा के माध्यम से इन्होंने हिंदी भाषा और हिंदी टाइपिंग सीखी। इसी कौशल के आधार पर इन्होंने हिंदी टाइपिस्ट के रूप में अपनी सरकारी सेवा शुरू की। जिपमेर, पुदुच्चेरी में कार्यरत रहते हुए इन्होंने एम.ए. (हिंदी) और पी.एचडी (तमिल+अंग्रेजी का तुलनात्मक अध्ययन) की डिग्री प्राप्त की और आज वे सहायक निदेशक (रा.भा.) के रूप में जिपमेर में कार्यरत हैं।

चौथा सत्र- भारत बनाम इंडिया में हिंदी की सर्वोत्कृष्टता

चौथा सत्र **"*भारत बनाम इंडिया में हिंदी की सर्वोत्कृष्टता*"** विषय पर था जिसके वक्ता थे स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के संयुक्त निदेशक (रा.भा.) डॉक्टर वेद प्रकाश दूबे। सत्र के अध्यक्ष थे जिपमेर पुदुच्चेरी के विकृति विज्ञान के प्रोफेसर सुरेंद्र वर्मा। डॉ. दूबे ने बताया कि सर्वप्रथम भारत शब्द का प्रयोग 02 मई, 1835 को ब्रिटिश संसद में लॉर्ड मैकाले द्वारा किया गया था। लॉर्ड मैकाले ने अपने भाषण में ब्रिटिश सरकार को चेताया था कि ऐसे देश को गुलाम बनाना संभव नहीं है, जिसकी संस्कृति इतनी महान और गौरवशाली हो। यदि इनकी भाषा, संस्कृति, नैतिक बल तोड़ दिया जाए तो ये बिना रीढ़ की हड्डी वाले हो जाएंगे। ये हमारी दी हुई भाषा, पोशाक को श्रेष्ठ समझेंगे, तब ये पूरा का पूरा मुल्क गुलाम बन जाएगा।

इसी दिशा में आगे बढ़ते हुए अंग्रेजों ने कोलकाता में अंग्रेजी शिक्षा के पहले कॉलेज विलियम कॉलेज की स्थापना की, यहीं से भारत के स्थान पर इंडिया की शुरुआत हुई। उन्होंने हमारी सभ्यता, संस्कृति, भाषा, चिंतन, परिवार, भोजन, जीव-जन्तु आदि का सूक्ष्म विश्लेषण कर इन पर प्रहार किया। ऐसा कोई कोना नहीं छोड़ा, जहां हमारी आस्था और श्रद्धा को तार-तार न किया हो। पोशाक, खान-पान, खेती-बाड़ी

आदि में भारतीयता को समाप्त कर पूरे देश को सांस्कृतिक, शैक्षणिक और मानसिक रूप से पंगु बना दिया गया।

अंग्रेजों की दी हुई अंग्रेजी शिक्षा से हमारे देश में गांधी जी, नेहरू जी आदि वकीलों के रूप में क्रांतिकारियों का उद्भव हुआ। इन क्रांतिकारियों ने हिंदी का एक संपर्क भाषा के रूप में प्रचार-प्रसार किया और जनसमूह को लामबंद किया। इसी भाषा के चलते उत्तर और दक्षिण में संस्कृति और सभ्यता में काफी समानताएं देखने को मिलती हैं। खुदीराम बोस, चंद्रशेखर आजाद आदि क्रांतिकारियों का जिक्र करते हुए श्री दूबे ने शंकराचार्य का भी जिक्र किया, जिन्होंने देश के चार कोनों में चार मठों की स्थापना इस उद्देश्य की कि भारतीय संस्कृति को किस तरह से संजोकर रखा जा सकता है। डॉ. दूबे ने कहा कि लगातार शिक्षा पद्धति से छेड़छाड़ करने के कारण आज हर क्षेत्र में भारतीयता के स्थान पर अंग्रेजियत छाई हुई है। चाइनीज फूड, विदेशी फूड को अपनाकर आज हम अपने भारतीय खान-पान को भूलते जा रहे हैं।

श्री दूबे ने कहा, हिंदी का प्रचलन अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में भी हो रहा है। आज नेटवर्क कंपनियां अपने नेटवर्क में 14 से अधिक भारतीय भाषाओं के माध्यम का विकल्प दे रही हैं। हिंदी भाषा थोपने वाली भाषा नहीं है, यह हमारे प्राचीन ऋषियों-मुनियों द्वारा दी गई अमूल्य निधि है। इसलिए भारतीय बनें, भारतीय रहें, भारतीय भाषा का अनुसरण करें।

इस अवसर पर सत्र के अध्यक्ष जिपमेर, पुदुच्चेरी के प्रोफेसर सुरेंद्र वर्मा ने कहा कि दक्षिण से लेकर कश्मीर तक पूरा देश एक है, इसमें एकता है। उन्होंने अपने जीवन के एक अनुभव को साझा करते हुए कहा कि 40 वर्ष पहले लखनऊ में हम बारी-बारी कैंसर का इलाज करने के लिए जाते थे, कोई एक-दो मरीज ही सालभर में आ पाते थे और आज ये हालत है कि आज हम तो लाइन में नहीं लगते लेकिन कैंसर के मरीज लाइन लगाकर खड़े हैं। इसका प्रमुख कारण हम अपनी भारतीय संस्कृति को भुलाकर विदेशी संस्कृति को अपना कर रहे हैं, ऐसे में इसका परिणाम हमें भुगतना ही होगा। यदि हम भारतीय संस्कृति को अपनाएंगे, तो बहुत-सी बीमारियाँ तो खुद व खुद ही दूर हो जाएंगी।

पांचवाँ सत्र- मधुमेह होने की संभावनाएं, लक्षण, जीवनशैली और बचने के उपाय

पांचवाँ सत्र ***"मधुमेह होने की संभावनाएं, लक्षण, जीवनशैली और बचने के उपाय"*** विषय पर था जिसके वक्ता थे अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान-एम्स, भुवनेश्वर के डॉक्टर गौरव छाबड़ा। सत्र की अध्यक्षता की- एम्स भोपाल के उप-निदेशक श्री संतोष सोहगोरा ने। डॉ. गौरव छाबड़ा ने पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से विस्तार से बताया कि मधुमेह यानि डायबिटीज़ के लक्षण क्या होते हैं, किन कारणों से मधुमेह हो सकता है, हमारी जीवनशैली में कौन-सी ऐसी चीजें हैं, जो इस रोग के होने की संभावनाएं बढ़ा देती हैं, उनके निवारण और क्या-क्या सावधानियां हमें बरतनी चाहिए।। उन्होंने बताया आयुष्मान भारत के तहत सबसे पहले जिस व्यक्ति का इलाज किया गया, वह मधुमेह से ही ग्रस्त था और वह छत्तीसगढ़ का रहने वाला था।

डॉ. गौरव छावड़ा ने बताया कि किसी चिकित्सीय विषय पर हिंदी में व्याख्यान देने का यह उनका पहला अनुभव है। उन्होंने बताया कि मीडिया ने मधुमेह को अनेक नामों संबोधित किया है जैसे: महामारी, मीठी मौत, सुनामी इत्यादि। उन्होंने बताया कि आज डायबिटिज के सबसे ज्यादा लोग भारत में हैं और दूसरे स्थान पर चीन में है। अगर भारत और चीन के डायबिटिज से पीड़ित लोगों को मिला दिया जाए, तो यह संख्या पूरे विश्व की मधुमेह से पीडित जनसंख्या के आधे से भी ज्यादा है। भारत को विश्व की मधुमेह

की राजधानी कहा जाता है। 1990 में भारत में डायबिटिज से पीड़ित रोगियों की संख्या 4-5% थी, जो 2016 में बढ़कर 15-20% हो गई है।

डॉक्टर छाबड़ा ने बताया कि चिकित्सा विज्ञान के अनुसार, मधुमेह यानि डायबिटिज मेलाइटस एक लाइलाज बीमारी है। लक्षणों के आधार पर कुछ सीमा तक इसमें राहत दी जा सकती है, परंतु इसे पूर्णत: ठीक नहीं किया जा सकता। डायबिटिज मेलाइट्स ग्रीक शब्द है, डायबिटिज का अर्थ है – नल का हैंडपंप, और मेलाइटस का अर्थ है मीठा अर्थात् शरीर में अत्यधिक शर्करा होना और शरीर से अत्यधिक मूत्र त्याग होना। डॉ. छाबड़ा ने इसका अर्थ समझाते हुए बताया कि हमारा भोजन पाचनतंत्र के माध्यम से ग्लूकोज में तब्दील हो जाता है, और आंतों के माध्यम से ग्लूकोस रक्त में चला जाता है। पेनक्रियाज से निकलने वाला इंसुलिन हार्मोन रक्त में विद्यमान ग्लूकोज को ऊर्जा शरीर की कोशिकाओं में पहुँचाता जो इसे ऊर्जा में तब्दील कर देती हैं। लेकिन डायबिटिज वह स्थिति है, जब रक्त में विद्यमान ग्लूकोज इंसुलिन हार्मोन की कमी के कारण ऊर्जा में तब्दील नहीं हो पाता और इसका स्तर बढ़ता जाता है।

उन्होंने डायबिटिज मेलाइट्स के तीन कारण बताए, पहला पैनक्रियाज में इंसुलिन का न बनना, दूसरा इंसुलिन बन तो रहा है, मगर पर्याप्त मात्रा में नहीं और तीसरा कारण इंसुलिन बन भी रहा है, परंतु हमारी कोशिकाएं इसके विरुद्ध (रेजिस्टेंट) हो जाती हैं और इसे स्वीकार नहीं करतीं। उन्होंने डायबिटिज मेलाइट्स के तीन प्रकार बताए टाइप-I, टाइप-II और जेस्टेशनल डायबिटिज। टाइप-I वह स्थिति है, जिसमें इंसुलिन का स्राव करने वाली पेनक्रियाटिक कोशिकाएं ऑटोइम्युनिटी के कारण नष्ट हो जाती हैं और इंसुलिन का स्त्राव कम या बिल्कुल नहीं हो पाता। यह आनुवंशिक है और कई बार 5-10 साल की उम्र के बाद इसका पता चलता है। इसकी व्याप्तता लगभग 5-7 प्रतिशत होती है। टाइप-II में इंसुलिन बनता तो है, परंतु हमारी कोशिकाएं इंसुलिन का विरोध करती हैं, और इसे स्वीकार नहीं करतीं। इसलिए इंसुलिन हार्मोन ग्लूकोज को कोशिकाओं तक नहीं पहुंचा पाता। इसकी व्याप्तता 90-95% है। यह अक्सर 30-40 साल की उम्र के बाद ही होती है। जेस्टेशनल डायबिटिज 5-7% महिलाओं में गर्भावस्था के दौरान होती है। इसमें लगभग वही स्थिति होती है, जो टाइप-II में होती है। डायबिटिज के लक्षणों में – अत्यधिक मूत्रस्राव (पोलियूरिया), अत्यधिक प्यास (पोलिडिप्सिया), अधिक भूख (पोलिफेजिया), अत्यधिक थकावट, घाव भरने में अधिक समय लगना आदि शामिल हैं। कई बार लक्षणों के न उभरने के बावजूद भी व्यक्ति इस रोग की गिरफ्त में हो सकता है।

डॉक्टर छाबड़ा के मुताबिक डायबिटिज मेलाइट्स के जोखिम कारकों में निम्नलिखित शामिल हैं:

- आंखों के पर्दे पर डायबिटिज मेलाइट्स का प्रभाव सबसे ज्यादा पड़ता है, जिससे पर्दा खराब होने की संभावना अधिक हो जाती है। इस पर्दे के खराब होने पर डायबिटिज रेटिनोपैथी की जाती है।
- मूत्र में अत्यधिक शर्करा की मौजूदगी के कारण गुर्दों पर अत्यधिक दुष्प्रभाव पड़ता है।
- पैरों की नसों का सूनापन होना।
- शिराओं व धमनियों पर दुष्प्रभाव।

डायबिटिज के कारणों में आनुवंशिकता, उम्र बढ़ना, खराब जीवनशैली, खराब खान-पान, उच्च रक्तचाप, अधिक कोलेस्ट्राल, अधिक वजन आदि शामिल हैं। उन्होंने इसकी जाँच के उपाय और तरीके भी सुझाए। इसकी रोकथाम इसके जोखिम कारकों पर नियंत्रण करके अनुशासित जीवनशैली अपनाकर की जा सकती है। धूम्रपान/मद्यपान का निषेध, छोटी-छोटी खुराकें और इनमें अंतराल, रेशायुक्त संतुलित भोजन, शारीरिक क्रियाशीलता, समय पर दवाएं, नियमित जांच, पथ्य-अपथ्य का विशेष ध्यान रखते हुए इस रोग पर काफी सीमा तक नियंत्रण पाया जा सकता है।

छठा सत्र- सहज और सरल अनुवाद : आमतौर पर की जाने वाली ग़लतियाँ

छठे सत्र में "***सहज और सरल अनुवाद : आमतौर पर की जाने वाली ग़लतियाँ*** " विषय पर स्वास्थ्य मंत्रालय के सहायक निदेशक (रा.भा.) श्री राजेश श्रीवास्तव ने अपने विचार व्यक्त किए। इस सत्र के अध्यक्ष थे-मंत्रालय से पधारे संयुक्त निदेशक (रा.भा.) डॉ. वेद प्रकाश दूबे। श्री श्रीवास्तव ने अपने व्याख्यान को पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से प्रस्तुत कर इस सत्र को एकदम जीवंत बना दिया। उन्होंने अनुवाद की सहजता, सरलता और बारीकियों पर विस्तार से चर्चा करते हुए इसके विभिन्न आयामों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि अनुवाद करना एक बहुत बड़ी कला है। सच्चा अनुवाद वही होता है जो अनुवाद जैसा लगे ही नहीं। उन्होंने कहा कि अनुवाद बहते हुए पानी-सा होता है जिसके प्रवाह में कोई अवरोध न हो और जिसे पढ़ने में अनुवाद, अनुवाद न होकर मूल पाठ सा ही लगे। उन्होंने बंग्ला और मराठी से हिंदी में अनुदित अनेक उपन्यासों का उल्लेख किया जिन्हें पढ़ते समय अनुभव ही नहीं होता कि अनुदित ग्रंथ को पढ़ा जा रहा है। श्री श्रीवास्तव ने कहा कि अनुवाद की भाषा सहज, सरल, भावानूकूल और बोधगम्य होनी चाहिए।

श्री श्रीवास्तव ने बताया कि किसी भी अनुवाद को करने से पहले उसकी पृष्ठभूमि की जानकारी होना बहुत आवश्यक है, अन्यथा अर्थ का अनर्थ हो सकता है। अनेक स्लाइडों के माध्यम से उन्होंने अनुवाद के अनेक उदाहरण प्रतिभागियों के लिए प्रस्तुत किए। उन्होंने पहले प्रश्न पूछकर प्रतिभागियों की राय जानी और फिर वास्तविक स्थिति प्रस्तुत की। प्रतिभागियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नोत्तरों ने इस सत्र को काफी रोचक बना दिया। उन्होंने कहा कि अनुवाद करते समय अप्रचलित और अमान्य शब्दों का इस्तेमाल करने से बचा जाना चाहिए और बेहद कठिन हिंदी का प्रयोग करने की बजाय ट्रांसलिटरेशन का सहारा लिया जाना चाहिए। श्री श्रीवास्तव ने लौहपथगामिनी, धुकधुकमंडल, पौद्दार, प्रतिदाय, अलर्क आदि ऐसे अनेक गूढ़ शब्दों के बदले में सामान्य और समझने योग्य शब्दों के प्रयोग को अनुवाद में लाने की सलाह दी। कम्प्यूटर के विभिन्न अंगों को अंग्रेजी के नाम से जाना जाता है जैसे माउस, की-बोर्ड, सीपीयू आदि, इन शब्दों को लोग इसी रूप में इनका प्रयोग करना आसान समझते हैं, अत: इनके हिंदी अनुवाद कर गूढ़ शब्दों का इस्तेमान न करें।

श्री श्रीवास्तव ने यह भी कहा कि शब्द संक्षिप्तियों में अक्सर अंग्रेजी के वर्णों का ही प्रयोग होता है। परंतु, आजकल देखा जा रहा है कि हिंदी की शब्द संक्षिप्तियां भी बखूबी प्रयोग की जा रही हैं। जैसे **मां** (एमएए) – मदर्स एब्सॉल्यूट अफेक्शन; **हृदय** (एचआरआईडीएवाई)- हार्ट रिलेटिड इंफोर्मेशन, डिसेमिनेशन एमॉंगेस्ट यूथ, **अमृत** (एएमआरआईटी)-एफोर्डेबल मेडिसिन्स एंड रिलाएबिल इम्प्लांट्स फॉर ट्रीटमेंट इत्यादि। इसके अतिरिक्त, श्रीवास्तव जी ने अनेक शब्दों, वाक्यांशों, स्लोगनों, वाक्यों, चिकित्सा पद्धति से जुड़ी शब्दावली आदि को द्विभाषी रूप में प्रस्तुत करके अनुवाद की बारीकियों का विस्तृत वर्णन किया। उन्होंने कहा कि अनुवाद करते समय भाषागत संस्कार बहुत काम करता है। अनुवाद को एक तो मूल रचना की भावना के करीब होना चाहिए और साथ ही उसमें एक ऐसा तारतम्य होना चाहिए कि पाठक विषयवस्तु के साथ बहता चला जाए। इस सत्र को बेहद सराहा गया और प्रतिभागियों ने बीच-बीच में अनेक तर्क-वितर्क और चर्चाएं कीं।

सत्र की अध्यक्षता कर रहे संयुक्त निदेशक (रा.भा.) डॉ. वेद प्रकाश दूबे ने श्री श्रीवास्तव को उनके सारगर्भित और उद्देश्यपरक व्याख्यान के लिए बधाई दी और कहा कि विभिन्न भाषा-संस्कृतियों के शब्दों का शब्दानुवाद संभव नहीं है। इनका अपनी भाषा-संस्कृति की विशिष्टताओं के अनुसार ज्यों का त्यों प्रयोग अथवा यथासंभव भावानुवाद ही किया जा सकता है। भाषा एक यज्ञ है, जिसे सीखना प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है। विभिन्न भाषाओं को सीखने के लिए हमेशा तत्पर और जिज्ञासु रहना चाहिए। उन्होंने एक पुराने वृतांत के माध्यम से बताया कि भाषाओं को सीखने की कोई उम्र नहीं होती। भाषा, संस्कृति और सभ्यता के बिना कोई भी देश अपनी पूर्णता को प्राप्त नहीं कर सकता। हर देश की अपनी भाषा और संस्कृति होती है,

जिसके सहारे वह समृद्धि पाता है और विकास करता है। अंत में डॉ. दूबे जी ने हिंदी व भारतीय भाषाओं के प्रति जिज्ञासा, चेतना, उत्सुकता को जगाए रखने का आह्वान किया।

सातवां सत्र- अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में हिंदी-राष्ट्रीय स्वाभिमान और राष्ट्रीय गौरव

छठे सत्र का विषय था- ***"अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में हिंदी-राष्ट्रीय स्वाभिमान और राष्ट्रीय गौरव"*** और इसके वक्ता थे संयुक्त निदेशक (रा.भा.) डॉक्टर वेद प्रकाश दूबे। इस सत्र की अध्यक्षता की क्षेत्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण कार्यालय, लखनऊ के क्षेत्रीय निदेशक श्री विजय चौधरी ने।

अपना व्याख्यान आरंभ करते हुए डॉ. दूबे ने हिंदी भाषा को देश की सर्वोत्कृष्ट भाषा के रूप में रेखांकित किया। उन्होंने भाषा की प्रभावशीलता और भारतीय भाषाओं में अंतर्निहित एकरूपता का उल्लेख किया। डॉ. दूबे ने समस्त प्रतिभागियों को शपथ दिलाई कि हम सब सर्वोत्कृष्ट भारतीय हैं, हम अंग्रेजियत को नकार कर अपनी भारतीय छवि को वापस लाएंगे और समस्त विश्व में इसका परचम लहराएंगे। प्राचीन भारत के गौरवशाली ज्ञान और संस्कृति का बखान करते हुए उन्होंने भास्कर, आर्यभट्ट, चरक, आदि विद्वानों तथा वेद-पुराणों का उल्लेख किया। उन्होंने बताया कि हमारे ऋग्वेद के श्लोकों और यहूदियों के धर्म ग्रंथ की पंक्तियों में काफी सामंजस्य और समानताएं देखी गई हैं। ऋषि च्यवन ने चिरयौवन व रोग प्रतिरोधक क्षमता के लिए औषधि बनाई, जो आज भी च्यवनप्राश के नाम से प्रचलित है।

उन्होंने तनाव व अवसाद जैसी आधुनिक बीमारियों के लिए चिरपुरातन चिकित्सा पद्धति प्रार्थना का उल्लेख किया, जो आज के परिवेश में भी उतनी ही कारगर है। मंदिर में आरती, गुरुद्वारे में गुरुवाणी, चर्च में प्रेयर, मस्जिद में अजान आदि जनसमूह में परस्पर मिलकर की जाने वाली प्रार्थना के अनेक रूप हैं, जो मन को शांति और सुकून प्रदान करती हैं। प्रार्थना विशिष्ट शब्दों का चयन करके बनाई गई ध्वन्यात्मक अभिव्यक्ति है। उन्होंने भारतीय भाषाओं, संस्कृतियों, साहित्य से ज्ञान प्राप्त करने का आह्वान किया, जिससे इनकी सर्वोत्कृष्टता का बोध होगा। भारतीय संस्कृति की महानता एकात्मक शक्ति है- सभी भाषाओं, संप्रदायों, संस्कृतियों को आत्मसात् करना। भारतीय संविधान में भी यह प्रावधान है कि सभी भारतीय भाषाओं-संस्कृतियों को आत्मसात् करके समूचे भारत का सामासिक व एकात्मक विकास हो। उन्होंने एक रोचक वृतांत के माध्यम से सुझाया कि अपनी भाषा-संस्कृति के विकास में हमें एकजुट होकर अपना-अपना बहुमूल्य योगदान निष्ठापूर्वक देना होगा तभी हमारा राष्ट्रीय स्वाभिमान और राष्ट्रीय गौरव अक्षुण्ण रहेगा।

सत्र के अध्यक्ष डॉ. वी.के चौधरी ने अपने संक्षिप्त संभाषण में उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग के एक इंटरव्यू का जिक्र करते हुए बताया कि समस्त चिकित्सा शिक्षा अंग्रेजी के माध्यम में होने के बावजूद उन्होंने इंटरव्यू हिंदी में देने का विकल्प चुना। उन्होंने बताया कि उनके कार्यालय में कार्यालयी काम-काज में नोटिंग ड्राफ्टिंग, पत्राचार आदि लगभग 90% काम मूल रूप से हिंदी में ही किए जाते हैं। उन्होंने अनेक चीजों जैसे नीम का पेड़, बास्मती चावल, जड़ी-बूटियों आदि का उल्लेख करते हुए बताया कि अमेरिका जैसे देश भी हमारी इन बहुमूल्य सांस्कृतिक धरोहरों पर पैटेंट कराना चाहते हैं। हमें इन धरोहरों को बचाकर रखना होगा। अंत में अपनी सांस्कृतिक विरासत, भाषा और साहित्य, ज्ञान-विज्ञान आदि पर गर्व महसूस करने का आह्वान करते हुए उन्होंने अपनी वाणी को विराम दिया।

खुला सत्र- प्रतिभागियों से परिचर्चा और सुझाव

सम्मेलन के अंतिम चरण में प्रतिभागियों के भी विचार सुनने के लिए एक खुले सत्र का आयोजन किया गया। इस सत्र के दौरान विभिन्न कार्यालयों से देश भर से पधारे प्रतिभागियों ने सम्मेलन के बारे में और अपने कार्यालय में हिंदी की विशिष्ट उपलब्धियों के बारे में अपने उद्गार प्रकट किए। अधिकांश प्रतिभागियों ने मंत्रालय द्वारा कराए गए इस बेहद सफल सम्मेलन के लिए उसका आभार प्रकट किया और बेहद महत्वपूर्ण विषयों पर वक्ताओं के ओजस्वी व्याख्यानों, शानदार मंच-संचालन, उत्तम व्यवस्था और

शानदार सम्मेलन स्थल की प्रशंसा की और कहा कि भगवान जगन्नाथ की सौभाग्यदायिनी उपस्थिति वाली पवित्र और पावन भूमि पर ऐसा सम्मेलन होना और उसमें उनका भाग लेना सबके लिए सचमुच परम सौभाग्य की बात रही। प्रतिभागियों से प्राप्त हुए लिखित फीडबैक में भी सम्मेलन की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई।

(सम्मेलन सभागार का एक दृश्य-प्रथम पंक्ति में बायें से दायें एम्स भुवनेश्वर के अधिकारीगण, मंत्रालय से पधारे प्रतिनिधि और अन्य प्रतिभागीगण)

इस अवसर पर श्री अरविंद कुमार, हिंदी अधिकारी, राष्ट्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण संस्थान, दिल्ली, श्रीमती वंदना शर्मा, राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान, दिल्ली, श्री एस.के. शर्मा, बजट एवं वित्त अधिकारी, राष्ट्रीय जैविक संस्थान, नोएडा, डॉक्टर विजय कुमार चौधरी, क्षेत्रीय निदेशक, क्षेत्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण कार्यालय, लखनऊ श्री शिंदे पांडुरंग, अनुवादक, निम्हांस, बंगलौर, श्री मीर सिंह, सहायक प्रशासनिक अधिकारी, डॉ. राम मनोहर लोहिया अस्पताल, दिल्ली, श्रीमती अनीता सिन्हा, परिवार कल्याण प्रशिक्षण तथा अनुसंधान केंद्र, मुंबई, श्री पी.के.जांगिड़, आईसीएमआर, भुवनेश्वर, डॉक्टर गौरव राज द्विवेदी, वरिष्ठ अनुसंधान अधिकारी, आईसीएमआर, भुवनेश्वर आदि जैसे अनेक प्रतिभागियों ने अपने विचार व्यक्त किए और सम्मेलन को बेहद सफल सम्मेलन करार दिया।

खुला मंच परिचर्चा का आरंभ करते हुए श्री अरविंद कुमार ने कहा कि वे इस प्रकार के सम्मेलनों में अक्सर भाग लेते रहते हैं। जो नई-नई अवधारणाएं हमारे मन में रहती हैं, उनका आदान-प्रदान करते हैं। हमारे संस्थान द्वारा "धारणा" नामक एक मासिक हिंदी पत्रिका भी नियमित रूप से प्रकाशित की जा रही है। उन्होंने सफल मंच संचालन के लिए श्री श्रीवास्तव को बधाई दी। श्रीमती अनिता सिन्हा ने कहा कि रोजमर्रा के कार्यालयी काम-काज से जो थकान और उबाऊपन हो जाता है, वह इस प्रकार के सम्मेलनों के माध्यम से दूर हो जाता है और एक नई प्रेरणा, नई ऊर्जा और आत्मविश्वास का संचार हो जाता है। डॉ. वंदना शर्मा ने कहा कि हमें स्वयं को भाग्यशाली समझना चाहिए कि हमें अपनी राष्ट्रीय भाषा, राजभाषा के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार में यह गरिमामयी पद मिला है। हमें अपने पद के साथ न्याय करते हुए हिंदी के उत्तरोत्तर विकास में अपना योगदान देते रहना चाहिए। श्री मीर सिंह ने अपने संस्थान राम मनोहर लोहिया अस्पताल में हिंदी क्षेत्र में हासिल की गई विशिष्ट उपलब्धियों का

बखान करते हुए अपनी एक रोचक कविता का पाठ किया। उन्होंने बताया कि हिंदी अनुभाग द्वारा भाषा ज्योति नामक विभागीय पत्रिका प्रकाशित की जाती है।

परिचर्चा को आगे बढ़ाते हुए डॉ. गौरव राज द्विवेदी ने क्षेत्रीय आयुर्विज्ञान संस्थान, भुवनेश्वर की उपलब्धियों को गिनाते हुए बताया कि 2017 से लेकर अब तक हिंदी के प्रगामी प्रयोग में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। उन्होंने देशभक्तिपूर्ण काव्य पंक्तियों के साथ अपनी वाणी को विराम दिया। श्री शिंदे पांडुरंग का कहना था कि इनका संस्थान इस मामले में सौभाग्यशाली रहा है कि इस मंत्रालय द्वारा पहला राष्ट्रीय राजभाषा सम्मेलन वर्ष 2012 में निम्हांस, बेंगलुरु में ही आयोजित किया गया था। इन आयोजनों में देश के कोने-कोने से विभिन्न भाषा-भाषी प्रतिभागियों के रूप में भाग लेकर हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपने सुझावों-विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। इस मंच पर उन्होंने मंत्रालय से अनुरोध किया कि विभिन्न संस्थानों के हिंदी अनुभागों में रिक्त पड़े अनुवादकों के पदों को शीघ्रता से भरा जाए।

इस अवसर पर श्री एस.के. शर्मा ने पंजाबी भाषा सीखने के अनुभव का जिक्र करते हुए बताया कि अपनी मातृभाषा से इतर भाषा सीखने का भी विशेष महत्व है, क्योंकि भाषाएं हमें एक-दूसरे से जोड़ती हैं। उन्होंने अपने संस्थान के बारे में बताया कि यहां जैविकीय पदार्थों जैसे इन्सुलिन, ग्लूकोमीटर आदि की गुणवत्ता की जांच करके इन्हें मानकीकृत किया जाता है। उन्होंने इस सम्मेलन में प्रतिभागी के रूप में भाग लेने का अवसर देने के लिए आभार व्यक्त किया। श्री प्रदीप कुमार ने अपनी दो मौलिक काव्य रचनाओं की पंक्तियां सुनाकर सम्मेलन में उपस्थित सभी अतिथिगणों व प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया। श्री विशाल कुमार गुप्ता ने राजभाषा की प्रगति की दिशा में अपने संस्थान की उपलब्धियों को गिनाते हुए बताया कि राजभाषा हिंदी के काम-काज को लेकर उन्होंने पिछले वर्ष भूरी-भूरी प्रशंसा बटोरी है। उन्होंने कहा कि हमारे यहां डॉक्टर और मरीज के बीच की बातचीत पूर्णत: हिंदी में होती है। साथ ही, चिकित्सक द्वारा प्रिस्क्रिप्शन भी हिंदी में ही दी जाती है। सत्र के दौरान यह चर्चा भी की गई कि अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, भुवनेश्वर में हिंदी पदों का सृजन किया जाए और उन्हें जल्द से जल्द भरा जाए ताकि राजभाषा संबंधी कार्य सुचारू ढंग से पूरे किए जा सकें। इस मौके पर कार्यक्रम के आयोजनकर्ताओं में एक और मंच संचालक श्री राजेश श्रीवास्तव ने अपनी सुप्रसिद्ध रचना **"चेहरे"** सुनाकर सबकी वाहवाही लूटी। इसके साथ ही खुला मंच परिचर्चा सत्र का सुखद समापन हो गया।

समापन समारोह

02 मई, 2019 की संध्या को सम्मेलन समाप्त हो गया। यह बड़ा अद्भुत लेकिन भीतर ही भीतर भयाक्रांत कर देने का अवसर भी था क्योंकि इस बात का जिक्र बार-बार मीडिया और अन्य माध्यमों से किया जा रहा था कि फोनी (फानी) नाम का समुद्री चक्रवात ओडिशा की ओर बहुत तेजी से बढ़ रहा था। साँप के फन के नाम पर नामकरण किए गए इस तूफान को आंध्रप्रदेश और तमिलनाडु के तटीय इलाकों से टकराना था लेकिन अपने नाम को सार्थक करते हुए इसने सर्प वाली चाल चली और ओडिशा की ओर मुड़ गया। सभी के दिलों में सम्मेलन के बेहद सफल होने का अपार हर्ष भी था तो आने वाले कल में तूफान के आने की आहट से दिल में धुक-धुक भी लगी हुई थी। लेकिन सम्मेलन की शानदार सफलता ने सभी को अभिभूत कर दिया। सभी प्रतिभागियों ने एकसुर में सम्मेलन की आयोजन व्यवस्था की मुक्तकंठ से प्रशंसा की और इसे अब तक का सबसे सफल सम्मेलन बताया। इस मौके पर आयोजित समापन समारोह की अध्यक्षता एम्स, भुवनेश्वर की निदेशक महोदया डॉ. गीतांजलि ने की। उनके साथ मंच पर विराजमान थे- डॉ. वेद प्रकाश दूबे, श्री राजेश श्रीवास्तव और एम्स के एमएस श्री एस.मोहंती तथा उप-निदेशक (प्रशासन) श्री प्रदीप कुमार राय।

(समापन समारोह- बायें से दायें एम्स भुवनेश्वर के श्री सच्चिदानंद मोहंती, डॉ. गीतांजलि, श्री प्रदीप कुमार राय, मंत्रालय से पधारे डॉ. वेदप्रकाश दूबे और श्री राजेश श्रीवास्तव)

निदेशक महोदया ने मंत्रालय की निगरानी में आयोजित इस कार्यक्रम की प्रशंसा की और उसकी सफलता पर बधाई दी। उन्होंने मंत्रालय के अधिकारियों सहित सभी उपस्थिति जनसमूह का आभार प्रकट किया और आशा व्यक्त की कि वे इस सम्मेलन से जरुर कोई अच्छी सीख अपने साथ ले जा रहे होंगे। डॉ. वेद प्रकाश दूबे, संयुक्त निदेशक (रा.भा.) ने मंत्रालय की ओर से विशेष रूप से निदेशक महोदय और अन्य अधिकारियों का आभार प्रकट किया जिनके मार्गदर्शन में यह कार्यक्रम इतना सफल तरीके से संपन्न हुआ। उन्होंने संस्थान के अन्य सहयोगी अधिकारियों विशेष रूप से श्री दिलीप कुमार मिश्र, कार्यालय अधीक्षक और श्री रवींद्र शर्मा, परामर्शदाता का भी आभार प्रकट किया जिन्होंने बेहद निष्ठा और कर्मठता के साथ समस्त कार्यों को संपन्न करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। डॉ. दूबे ने उपस्थित सभी प्रतिभागियों का आभार प्रकट किया। उन्होंने विशेष रूप से मंत्रालय के आर्थिक सलाहकार महोदय श्री नीलाम्बुज शरण का आभार प्रकट किया जिनके संपूर्ण मार्गदर्शन और सहयोग के बिना इस कार्यक्रम का आयोजित हो पाना संभव नहीं था। श्री दूबे ने बेहद कुशल और शानदार गरिमामय मंच संचालन के लिए अपने साथी अधिकारी श्री राजेश श्रीवास्तव को भी बधाई दी जिन्होंने अपने व्याख्यान ही नहीं, मंच संचालन से भी सभी को सम्मोहित किया। श्री श्रीवास्तव ने इस मौके पर संस्थान की निदेशक महोदया और अन्य समस्त अधिकारियों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने आयोजक कार्यालय और बेहद उत्साह से भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों का आभार प्रकट किया और सम्मेलन को सफल बनाने में उनके योगदान के लिए उन्हें धन्यवाद दिया। उन्होंने विशेष रूप से श्री दिलीप कुमार मिश्र, कार्यालय अधीक्षक और श्री रवींद्र शर्मा, परामर्शदाता के अथक प्रयासों और इस सम्मेलन के आयोजन को सफल बनाने हेतु निरंतर प्रयासरत रहने के लिए उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की और उनका आभार प्रकट किया।

(निदेशक, एम्स महोदया के साथ सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रतिभागीगण)

(सम्मेलन के आयोजक और भाग लेने वाले प्रतिभागीगण)

एम्स, भुवनेश्वर की ओर से श्री रवींद्र शर्मा ने समस्त प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया और उन्हें इस शानदार सम्मेलन में भाग लेने पर बधाई दी। उनकी सक्रिय भागीदारी के लिए धन्यवाद भी दिया।

(मंत्रालय के प्रतिनिधि-बायें से दायें श्री राजेंद्र कुमार, श्री राजीव कुमार, श्री राजेश श्रीवास्तव, डॉ. वेदप्रकाश दूबे)

इसके पश्चात, निदेशक, एम्स महोदया द्वारा सभी प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र वितरित किए गए। इसके साथ ही मंत्रालय के देश भर में स्थित कार्यालयों को एक ही मंच पर जोड़ने वाला एक बेहद सफल राष्ट्रीय राजभाषा सम्मेलन संपन्न हो गया।

♦♦♦♦♦

भाग लेने वाले प्रतिभागियों की सूची

क्र.सं.	प्रतिभागी अधिकारी का नाम और पदनाम	कार्यालय का नाम
1.	डॉ. वेद प्रकाश दूबे, संयुक्त निदेशक (रा.भा.)	स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, नई दिल्ली
2.	श्री राजेश श्रीवास्तव, सहायक निदेशक (रा.भा.)	स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, नई दिल्ली
3.	श्री राजेंद्र कुमार, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी	स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, नई दिल्ली
4.	श्री राजीव कुमार, आशुलिपिक	स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, नई दिल्ली
5.	डॉक्टर एन.आर.के. बेहेरा, अ. निदेशक	परिवार कल्याण प्रशिक्षण तथा अनुसंधान केंद्र, मुंबई
6.	श्री ए. के. मोहता, प्रशिक्षण अधिकारी (स्वच्छता)	परिवार कल्याण प्रशिक्षण तथा अनुसंधान केंद्र, मुंबई
7.	श्रीमती अनीता एस. सिन्हा, क. हिन्दी अनुवादक	परिवार कल्याण प्रशिक्षण तथा अनुसंधान केंद्र, मुंबई
8.	डॉ. वंदना शर्मा, सहायक निदेशक (रा.भा.)	राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान, द्वारका, दिल्ली
9.	श्री रघुबर दत्त, एमटीएस	राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान, द्वारका, दिल्ली
10.	श्री मोहन सिंह बिष्ट, प्रयोगशाला सहायक	राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान, द्वारका, दिल्ली
11.	श्री बंशीधर, एमटीएस	राष्ट्रीय मलेरिया अनुसंधान संस्थान, द्वारका, दिल्ली
12.	श्री एस.के. शर्मा, बजट एवं वित्त अधिकारी	राष्ट्रीय जैविक संस्थान, नोएडा, उ.प्र.
13.	श्री आर.के. अरोड़ा, आशुलिपिक ग्रेड-III	राष्ट्रीय जैविक संस्थान, नोएडा, उ.प्र.
14.	श्री मीर सिंह, सहायक प्रशासनिक अधिकारी	डॉ. राम मनोहर लोहिया अस्पताल, नई दिल्ली
15.	श्री आनंद प्रकाश, भण्डारी	डॉ. राम मनोहर लोहिया अस्पताल, नई दिल्ली
16.	श्रीमती अनीता राय सक्सेना, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक	अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, दिल्ली
17.	श्रीमती प्रेमलता, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक	अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, दिल्ली
18.	डॉक्टर पंकज अनेजा, हिंदी अधिकारी	स्नातकोत्तर चिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, चंडीगढ़
19.	श्री अनिल कुमार, उप-निदेशक (प्रशा.)	राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण संस्थान, नई दिल्ली
20.	श्री अरविंद कुमार, हिंदी अधिकारी	राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण संस्थान, नई दिल्ली
21.	श्री वी. एस. रावत, अवर श्रेणी लिपिक	राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण संस्थान, नई दिल्ली
22.	श्री वी. सीतारामू, प्रशासनिक अधिकारी	अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, रायपुर (छत्तीसगढ़)
23.	श्री तुलसी राम, सहा. प्रशासनिक अधिकारी	अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जोधपुर (राजस्थान)
24.	श्री मिलिंद सोलंकी, सहा. प्रशासनिक अधिकारी	अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जोधपुर (राजस्थान)
25.	श्री दीपेश, कार्यालय सहायक	अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जोधपुर (राजस्थान)
26.	डॉक्टर विजय कुमार चौधरी, क्षेत्रीय निदेशक	क्षेत्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण कार्यालय, लखनऊ
27.	श्री शिखर रंजन, विधि अधिकारी	भारतीय आयुर्विज्ञान परिषद, द्वारका, दिल्ली
28.	श्रीमती माहेश्वरी, कनिष्ठ अनुवादक	भारतीय आयुर्विज्ञान परिषद, द्वारका, दिल्ली
29.	श्रीमती ज्योति सिंह, हिंदी अधिकारी	चितरंजन राष्ट्रीय कैंसर संस्थान-सीएनसीआई, कोलकाता
30.	श्री सुरेंद्र कुमार वर्मा, आचार्य, विकृति विज्ञान विभाग	जवाहरलाल स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान-जिपमेर, पुदुच्चेरी
31.	डॉ. एन. कामाक्षी, सहायक निदेशक (रा.भा.)	जवाहरलाल स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान-जिपमेर, पुदुच्चेरी
32.	श्री देवानंद कुंभारे, अनुभाग अधिकारी	भारतीय दंत परिषद, कोटला रोड, नई दिल्ली
33.	श्री संतलाल गुप्ता, वरिष्ठ सचिवालय सहायक	भारतीय दंत परिषद, कोटला रोड, नई दिल्ली
34.	श्री शिंदे पांडुरंग, कनिष्ठ अनुवादक	राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य एवं तंत्रिका विज्ञान संस्थान-निम्हांस, बंगलुरू
35.	श्री संतोष सहगौरा, उप-निदेशक (प्रशासन)	अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, भोपाल (म.प्र.)
36.	श्री विशाल कुमार गुप्ता, प्रशासनिक अधिकारी	अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, भोपाल (म.प्र.)
37.	श्री के.आर.मीना, सहायक निदेशक (रा.भा.)	भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद-आईसीएमआर, नई दिल्ली
38.	श्रीमती माया बलहारा, उच्च श्रेणी लिपिक	भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद-आईसीएमआर, नई

		दिल्ली
39.	डॉक्टर एस. रामकुमार, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी	अखिल भारतीय वाक् एवं श्रवण संस्थान-आईश, मैसूरु
40.	श्री महेश चंद, कनिष्ठ अनुवादक	सफदरजंग अस्पताल, नई दिल्ली
41.	श्री प्रणव कुमार, अनुभाग अधिकारी (हिंदी)	राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड, नई दिल्ली
42.	श्री हेमंत कुमार, कार्य सहयोगी	राष्ट्रीय परीक्षा बोर्ड, नई दिल्ली
43.	श्री राकेश बालाजी लिखार, उ.श्रेणी लिपिक	भारतीय उपचर्या परिषद, नई दिल्ली
44.	डॉक्टर गौरव राज द्विवेदी, वैज्ञानिक-सी	आईसीएमआर, भुवनेश्वर
45.	श्री पी.के.जांगिड़,	आईसीएमआर, भुवनेश्वर
46.	डॉक्टर मिताली मधुस्मिता मिश्रा, क्षे. स्वास्थ्य अधिकारी	क्षे. कार्यालय, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, भुवनेश्वर
47.	सुश्री अंकिता पाल, कनिष्ठ सांख्यिकीय अधिकारी	क्षे. कार्यालय, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, भुवनेश्वर
48.	डॉक्टर दीपक कुमार स्वैन, सलाहकार (एंटोमोलॉजी)	क्षे. कार्यालय, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, भुवनेश्वर
49.	-	अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, ऋषिकेश
50.	-	अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, ऋषिकेश
इसके अतिरिक्त, भुवनेश्वर स्थित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति से नामित 30 प्रतिभागियों और एम्स, भुवनेश्वर से नामांकित करीब 25 प्रतिभागियों ने भी सम्मेलन में सक्रिय रूप से हिस्सा लिया।		